

BIHAR

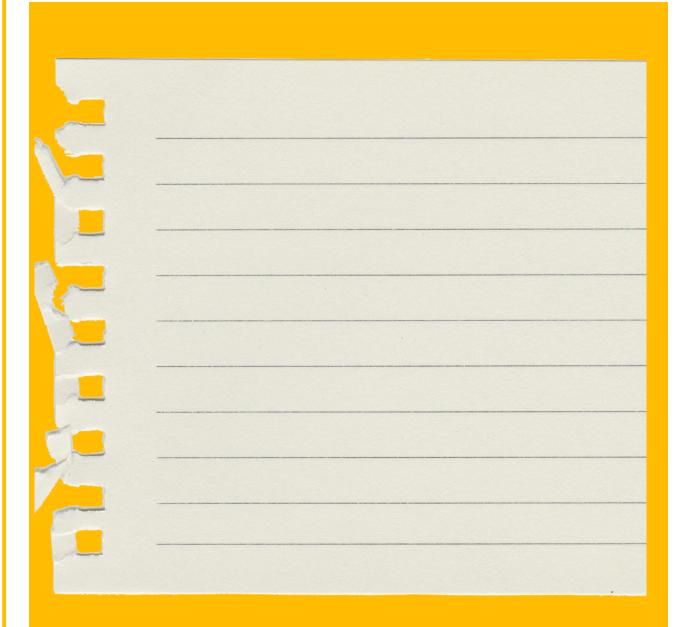
YOUTH NETWORK



मेरी क्या गलती थी?

दिसम्बर का महिना था, ठंढ काफी पड रही थी। हमारा जो गाँव हैं, वो चारों तरफ से पहाडियों में घिरा हआ हैं, और उसके पास में डैम होने से हमारे यहाँ ठंढ काफी थी। शाम का समय था और मैं अपने घर में लकड़ियाँ जलाकर आग की गरमाहट को महसूस कर रही थी। तभी मुझे वहाँ बैठे-बैठे ख्याल आया की आखिर क्यों लड़िकयों की शादी उसकी मर्जी जाने बिना हीं कर दी जाती हैं, क्यों उससे कुछ पूछा नहीं जाता हैं ? ये बातें जो मैं सोच रही थी, वो किसी और की नहीं बल्कि मेरी सहेली का हैं। उसकी उम्र तकरीबन 12 साल की थी। समाज और घर के कुछ लोगों के दबाव से उसकी शादी कर दी गई थी। मैं इस बात को सोचती हूं और अपने अंदर गलानी महसूस करती हूँ की आखिर क्यों मैं उसके लिए कुछ नहीं कर पाई । जो सबके साथ हो रहा था, वहीं इसके साथ भी हुआ। कुछ इसी तरीके से मेरी सहेली का जीवन चल रहा था। वो मेरे साथ पढाई करती थी, मेरे साथ हीं वो खेला करती थी । लेकिन गाँव की सालों से चली आ रही रीति-रिवाज के कारण वो हमसे अलग हो गई।

उसके अंदर बचपना था, वो खेलकुद में आगे रहा करती थी और उसे नाचना बहुत पसंद था । उसकी शादी हो जाने से अब वो इस सभी से काफी दूर हो चुकी थी। जब वो गवना होकर अपने ससुराल वाले के यहाँ जाती है तो उसे वहाँ काफी आदर और सम्मान के साथ स्वागत किया जाता हैं । वो भी बहत खुश थी । लेकिन जब ओ अपने पति के पास गई तो उसका पति उसे पहचानने से साफ इंकार कर दिया और उसे बोला की मैं इसे नहीं जानता हूँ, ये कौन हैं? मैं ये अनपढ़ -गवार को अपने साथ नहीं रख सकता, तुम अभी मेरे नजरों से दूर चली जाओ। ये सभी बातें सुनकर मेरी सहेली रोने लगी। वो अब करे तो क्या करे, कहाँ जाए । वो लडका ऐसा इसलिए उसे बोला क्योंकि वे शहर में रहकर पढाई कर रहा था और वो शहर की चकाचौंघ देखकर वाकिफ हो चुका था । और मेरी सहेली गाँव की रहने वाली थी, इसलिए वो उसे अब अपनाने से मना कर दिया था। परंतु मेरी सहेली का वहाँ एक ना सुना गया और वो वापस अपने गाँव चली आई।



जिस तरीके से ये पन्ना मेरा खाली रह गया हैं, उसी तरीके से मेरी सहेली का जीवन सुना पड़ गया था। अब वो अपने घरवालों से पुछना चाहती थी कि मेरी क्या गलती थी? क्या मैंने जो समाज का बात माना, घरवालों का बात माना, क्या ये थी मेरी गलती? मैं अपने मन में सोच रही थी कि जो मेरी सहेली के साथ हुआ अगर हर लड़की के साथ ऐसा हुआ तो, ना जानें कितने घर की कोयल चहकना बंद कर देगी। फिर काफी रात हो जाने के कारण मैं अपने बिस्तर पर आ गईं।

संगीता भारती सेंटर डायरेक्ट, रजौली नवादा, बिहार (805125)

बाल मजदूरी

एक बार की बात है, शाम का समय था, उस वक्त मैं अपने घर पर था। तभी बाहर से कुछ आवाज़े सुनाई दी, तो मैं बाहर निकला और देखा की बहुत सारे बच्चों की टोली एक जगह इक्कठा होकर बैठी हुई थी, और उसके साथ में बहुत सारी औरतें और पुरुष भी थे। शायद मेरे ख्याल से वे उनके माता-पिता होंगे । सभी बच्चे एक-दूसरे से बातें कर रहे थे, उन सभी बच्चों की उम्र लगभग 5-6 साल तक की होगी । मैं उनलोगों के बीच गया और उन बच्चों से और जो औरत - पुरुष थे उनसे बातें करने की कोशिश की । मैं उनसे बातें करके यह पता लगाना चाह रहा था कि आखिर ये लोग इतनी सारी संख्या में कहाँ और किस काम के लिए जा रहे हैं । तो मैंने उन औरतों में से एक से बात की तो उसने बताया कि हम सभी लोग कहीं दूसरे जगह काम करने के लिए जा रहे हैं। तो मैंने उनसे पूछा कि आखिर कहाँ और कौन सी काम के लिए ? तो उन्होने मुझे बताया की हम सभी किसी दूसरे शहर में ईट के भट्टो में काम करने के लिए जा रहे हैं। मैंने उनसे पूछा की क्या ये सभी बच्चे भी वहाँ ईट के भट्टो में काम करते हैं, तो उनके द्वारा जबाब आया - हाँ । मैं इस बात को सुनकर आश्चर्य चिकत रह गया । तभी वहाँ एक बस आई और वे सभी लोग उन बसो पर सवार होकर चले गये और मैं देखता हीं रह गया । मुझे बडा दु:ख हुआ और मन हीं मन सोचा कि आखिर मैं क्यों नहीं कुछ कर सका । मैं निराश होकर वापस को अपने घर चला आया । घर चले आने के बाद मैं इन सभी बातों को सोच रहा था । फिर काफी समय हो चुका था मैं खाना खाया और सो गया । जब सुबह हुई तो मेरे अंदर फिर से ये सभी बाते मन हीं मन गूंज रही थी । मैं इन सभी बातों को अपने दोस्तों और गाँव के कुछ लोगों के सामने रखा, तो मुझे वहाँ से सुनने को मिला की ये सभी जो करवाया जाता हैं वो सभी हमारे गाँव और समाज के कुछ बिचौलियों के द्वारा किया जाता हैं। जिससे उसे कमीशन के तौर पर कुछ पैसे दिये जाते हैं । जिससे उसे काफी मुनाफा भी होता हैं । इन सभी बातों और आखों द्वारा देखा गया इन सभी दृश्यों को देखकर यहीं लगता हैं कि अगर आज हमारे गाँव में, हमारे शहर में उद्दोगो की स्विधा होती तो इन सभी बच्चों के साथ जो हो रहा हैं, वो ना होता, उन्हे भी प्राथमिक शिक्षा दी जाती।



नव निर्वाचित मुखिया जी से शौचालय की मांग

युवा सहभागी मंच ग्राम मोतीतरी, प्रखण्ड- हवेली खड़गपुर, जिला- मुंगेर एक ग्रामीण युवाओं का मंच हैं। जिसमें युवा अपनी विकास के लिए और गाँव के विकास के लिए दृढ़ संकल्पित हैं। दिनांक- 30-10-2021 को आयोजित युवा सहभागी मंच के बैठक में गाँव के किशोरियों, महिलाओं एवं बच्चों के स्वास्थ्य एवं शिक्षा पर बातचीत प्रारम्भ हुआ। जिसमें उपस्थित किशोरियों ने एक मत से कही की हमारे गाँव में सौचालय की सुविधा नहीं हैं, जिसके कारण हमलोगों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता हैं। दिन में किसी तरह छिपकर सौचालय जाते है, तो रात में साप, बीछू और गलत आदमी के अत्याचार का भय सताता हैं। जिसके चलते अकेली नहीं जा पाती, कई लोगों को साथ लेकर जाना पड़ता हैं। ठंढ और बरसात के मौसम में तो और भी दिक्कतों का सामना करना पड़ता हैं। एक ओर जहां हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी महिलाओं की सुरक्षा, किशोरियों के विकास और स्वच्छता के लिए दृढ़ संकल्पित है, फिर भी हमारे गाँव में सौचालय नहीं बना हैं। हमारा गाँव 80 परिवारों का एक छोटा सा गाँव हैं, जो जंगल के किनारे बसा हुआ हैं। यहाँ के लोगों का मुख्य पेशा पत्ता एवं लकड़ी चुनना और मजदूरी करना हैं। इसी विषय पर काफी चर्चा होने के बाद युवा सहभागी मंच मोतीतरी के सभी सदस्यों ने मिलकर युवा साथी राकेश हेम्ब्रम, नशीला कुमारी, सुशीला कुमारी, सीमा कुमारी, नंदनी कुमारी, शबनम कुमारी, नरेश कुमार, मंटू कुमार, संजु कुमारी, राम कुमार, कवल कुमार, कोमल कुमारी, जितेंद्र कुमार एवं सुनीता कुमारी ने माननीय मुखिया श्री नवल किशोर सिंह को सौचालय बनवाने के लिए एक मांग पत्र सौपा।



मन की बात

एक बार एक प्रोफेसर ने अपने Student से कहा बच्चों तुमलोग ढेर सारा बैलून फुलाओ और उसमें अपना – अपना नाम लिखो और सब बैलून को एक जगह मिला दो। मिलाने के बाद प्रोफेसर ने कहा 5 मिनट के अंदर अपना – अपना नाम लिखा हुआ बैलून ढूंढकर निकालो । सभी Student बैलून ढूंढते – ढूंढते थक गया, किसी ने नहीं खोज पाया और समय भी हो गया। फिर प्रोफेसर ने सभी Student को एक – एक बैलून उठाने के लिए कहा और बोला की जिस भी नाम के बैलून है उस Student को दे दें । एस करने से सबै Student को मिनट के अंदर अपने – अपने नाम का बैलून मिल गया । इस कहानी से हमे यह सीख मिली की अगर हम किसी भी काम को एक साथ मिलकर करते है तो बड़ी से बड़ी समस्या का हल तुरंत हो सकता हैं ।क्योंकि एकता में हीं बल हैं ।

आरती हेम्ब्रम दिशा विहार, चकाई जमुई, बिहार

भूमिका युवाओं का

बिहार के जमुई जिले के चकाई प्रखण्ड के बोझा पंचायत के बेहरा गाँव के युवा दिलीप हेम्ब्रम, पिता- रमेश हेम्ब्रम, उम्र- 14 वर्ष, जिसको नशे की भारी लत लगी हुई थी। वह हमेशा नशे की हालत में रहता था, जिस कारण उसकी पढ़ाई-लिखाई नहीं हो पा रही थी। उसको हमेशा नशे की स्थिति में देखकर उसके माता-पिता हमेशा बहुत परेशान रहा करते थे। उसके माता-पिता को हमेशा परेशान देखकर हम सभी युवाओं ने उनसे मिलकर बात किये और फिर उन्हे नशा से होने वाले दुष्प्रभाव के बारे में जानकारी दिये। दिलीप के साथ हम सभी युवाओं ने मिलकर नशा से होने वाले दुष्प्रभाव के बारे में चर्चा की और नशा मुक्त रैली पुरे गाँव में निकाली। अत्यंत प्रयास के बाद दिलीप में नशा की लत धीरे-धीरे समाप्त हो गई और आज दिलीप हमारे युवा समूह का सदस्य हैं और वह युवा समूह के द्वारा किये जाने वाले सभी कार्यक्रमों में उत्साह पूर्ण भाग लेता हैं। युवा समूह के द्वारा जो भी कार्य दिया जाता हैं वह उस कार्य को पूरी जिम्मेवारी और लगन के साथ पूरा करता हैं। साथ हीं दिलीप ने यह संकल्प लिया है कि अब ना हम नशा करेंगे और ना हीं किसी और को करने देंगे। आज दिलीप समाज के सभी वर्गो को नशे से होने वाले दुष्प्रभाव के बारे में जागरूक करता हैं और अब दिलीप की पढ़ाई भी सुचारु रूप से जारी है। इस बदलाव से हम सभी युवा साथी और उनके घरवाले बहुत खुश हैं।

मैं अचानक बड़ी हो गई......

कुछ दिन पहले की हीं तो बात हैं घर के बाहर रस्सी कूदती थी, भाई के दोस्तो के साथ दौड़ लगती थी, आम के पेड़ पर फट से चढ़ जाती थी, पैंट या फ्रांक कुछ भी पहन लेती थी। फिर एक दिन मुझे माहवारी शुरू हो गई, तो दादी ने कहा की तुम अब सयानी हो गईं। पिताजी ने कहा मेरी बेटी बड़ी हो गई, इसकी शादी कर दो। माँ ने कहा यह सबको होता है सबने मुझे कहना शुरू कर दिया घर के बाहर मत जाया करो, ज्यादा हंसो – मुस्कुराओ नहीं छुधानी पहनो, लड़को से बातचीत मत करो, खेलना बंद कर दो, स्कर्ट- फ्रांक, पैंट नहीं पहनो। मेरा स्कूल जाना भी बंद हो गया। बहुत बुरा लगता है, कभी-कभी तो ऐसा लगता था की अगर मैं लड़की नहीं होती तो अभी भी मई अपने भाइयों के तरह उछल-कूद करती

मेरा अपना घर कहाँ हैं?

और अब एक दूसरे शहर में मेरा रिस्ता तय हो गया हैं मैं तो वहाँ किसी को जानती भी नहीं । कहीं मैं उनलोगों को पसंद नहीं आई तो? अगर उनलोगों ने मुझे प्यार नहीं किया तो? माँ कहती हैं कि मेरा कर्तव्य है कि मैं ससुराल में सबको खुश रखूँ, नहीं तो सभी लोग कहेंगे कि इसकी माँ ने इसे कुछ सिखाया हीं नहीं । पिताजी भी कहते है की उनकी इज्जत मैं हूँ अब मुझे हमेशा के लिए उसी घर में रहना होगा, क्योंकि अब मेरा घर वहीं हैं ।



भूमिका युवाओं का

में मेघा कुमारी, घर- सिताकुंड, मुंगेर, बिहार, मैं युवा सहभागी मंच की सदस्य हूँ। मैं अपने जीवन के बारे में कुछ बताना चाहती हूँ । मेरे जीवन में बहुत सी बातों में बदलाव हुआ और मेरे मन में इस बदलती समाज के सोच के कारण हमारे जीवन में क्या बुरा असर पड़ा है । लेकिन युवा सहभागी मंच से जुड़ने के बाद मुझमें और मेरे गाँव के दोस्तो में क्या बदलाव आया हैं । मैं पहले समय के साथ कुछ भी नहीं करती थी, कभी भी पढ़ती थी, कभी भी खेलती थी । लेकिन अब मैं समय की कीमत को जानने लगी हूँ । इसलिए समय से पढ़ती, खेलती, खाती एवं सोती हूँ । इसी के साथ मैं अपने रोज की जिंदगी में उपयोग होने वाली चीजों से जैसे- प्लास्टिक का रैपर, पालिथीन आदि चीजों को यूंही सड़कों पर, घरों में, स्कूलों में कहीं भी फेक दिया करती थी। लेकिन अब मैं कोशिश करती हूँ कम से कम प्लास्टिक का उपयोग करूँ और लोगों को भी प्लास्टिक का उपयोग करने से मना करती हूँ । और उन्हे बताती हूँ की प्लास्टिक का उपयोग करना हमारे एवं हमारे पर्यावरण के लिए कितना हानिकारक हैं । अब मैं पानी को भी बचा-बचा कर इस्तेमाल करती हूँ । जैसे मैं पहले स्कूल से बचे पानी का यूंही कहीं भी नाले में फेक दिया करती थी। लेकिन अब मैं हमेशा से स्कूल से बचे पानी को रास्ते में पेड़ के जड़ में दाल देती हूँ, तािक उस पानी का सही से इस्तेमाल हो सके और पर्यावरण भी संरक्षित हो सके। और मैं अब तो अपने आस-पास सफाई भी रखती हूँ लेकिन समाज का बहुत बड़ा वर्ग आज भी कचड़े को कहीं भी फेक देता हैं । हमारा गाँव नदी किनारे होने के कारण बाढ़ आने पर वो सारा कचरा नदी में प्रवेश कर जाता हैं जिस कारण नदियां भी प्रदूषित होती हैं । लेकिन युवा सहभागी मंच के हस्तक्षेप के कारण आज हमारे गाँव के लोग भी पर्यावरण संरक्षण एवं साफ सफाई के लिए जागरूक हो रहे हैं ।



मोतीतरी गाँव में परिवर्तन की लहर

मोतीतरी गाँव एक आदिवाशी बहुल्य गाँव हैं । जिसमें आदिवाशी, ओ. बी. सी. एवं दलित परिवार के 80 घर बसे हुये हैं। जिसकी आबादी लगभग 650 के आस-पास हैं । पहाड़ और जंगल के किनारे बसा हुआ यह गाँव हैं । मुंगेर जिला मुख्यालय से 65 किलोमीटर दूर हैं । साथ हीं इस गाँव में पहुचने का रास्ता भी बाधित हैं । फिर भी सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्था, दिशा विहार ने युवाओं को उनके अपने विकास और अपने गाँव के विकास के लिए पिछले 3 वर्षों से संपर्क, संवाद, प्रशिक्षण एवं बैठक कर रही हैं।आज हमारे गाँव में ग्राम स्तरीय युवा सहभागी मंच का स्थापना हुआ हैं । जिसमें गाँव के किशोर एवं किशोरी इसके सदस्य हैं । 15 युवाओं का संचालन समिति भी हैं।हमारे गाँव में प्राथमिक विद्यालय एवं मध्य विद्यालय भी हैं। लेकिन गाँव के लड़के मध्य विद्यालय तक पढ़ने जाते थे, लेकिन अनियमित थे । किशोरियाँ भी स्कूल जाती थी, लेकिन जो सम्पन्न परिवार से थी वो सिर्फ जा पाती थी। लेकिन जब युवा सहभागी मंच बना तो आज पढ़ने – पढ़ाने का माहौल बना हैं । आधे से अधिक किशोरियाँ अपने गाँव से दूर गंगटा हाई स्कूल पढ़ने जाती हैं । आज हमारे गाँव से 10 लड़की एवं 15 लड़के स्कूल जाते हैं। और साथ हीं हमारे गाँव में निम्नलिखित परिवर्तन भी देखने को मिल रहा हैं –

- जो बच्चे विद्यालय नहीं जाते थे, वे भी अब विद्यालय जा रहे हैं और पढ़ना चाह रहे हैं।
- िकशोर एवं किशोरी मिलकर प्रत्येक सप्ताह खेलकुद का आयोजन करते हैं और साथ-साथ मिलकर कब्बडी और क्रिकेट खलते हैं।
- साथ साथ विद्यालय जाते हैं, जो कमजोर विद्यार्थी हैं उनके साथी उनकी मदद भी करते हैं।
- आपसी सहयोग से 2 जनवरी 2022 से कंप्यूटर प्रशिक्षण का शुभारंभ किया जा रहा हैं । जिसकी पूरी तैयारी कर ली गई हैं ।
- ःहमलोगों के युवा संगठन में लगातार जेंडर संवाद हुआ, जिसमें एक दूसरे को सम्मान की नजर से देखते हैं । साथ हीं गाँव की विकास और अपनी विकास के लिए सामूहिक निर्णय लेते हैं।
- कई बार गाँव की साफ-सफाई सभी लोग मिल जुलकर किए, परिणाम स्वरूप स्वच्छता का संदेश गया और लोग साफ-सफाई के प्रति जागरूक हुये ।
- सभी युवा अपने घर के पास खाली जमीन पर कीचेन गार्डेन लगाए हैं।जिनका उनको लाभ मिल रहा हैं।
- गाँव में सौचालय नहीं इसके लिए सौचालय विहीन परिवारों की सूची तैयार कर माननीय मुखिया जी को आवेदन दिये हैं।

और इस तरह से हमारे गाँव (मोतीतरी) में परिवर्तन का लहर दिख रहा हैं।

काश मैं भी विद्यालय जा पाती

शीतऋतु का मौसम चल रहा था और ठंडी-ठंडी हवाएँ चल रही थी। पूरे गाँव में ज्यादा ठंड होने से कोहरे ने अपना दस्तक देना शुरू कर दिया था। और प्रातः कालीन ओस की बूंदों ने भी कपकपाती और ठिठुरता हुआ अपना असर बिखेरना शुरू कर दिया था। प्रातः काल का हीं समय था जब मैं अपने दरवाजे पर बैठकर आग की गर्माहट को महसूस कर रही थी। तभी हीं मेरी नजर अचानक मेरे हीं उम्र की लड़के – लड़िकयों पर पड़ी और मैंने देखा की कुछ मेरे हीं उम्र के लड़के – लड़िकयाँ अपने हाथों में पाटी, बस्ता, कॉपी-किताब लेकर अपने विद्यालय जा रहे थे। उन सबों को अचानक देखकर मेरे अंतर्मन में यह चाहत जगी की काश मैं पुनः अपने विद्यालय जाकर अधूरी पढ़ाई पूर्ण करने के साथ आगे की पढ़ाई कर पाती। काश मैं भी इन बच्चों की तरह विद्यालय जाती, वहाँ अपने दोस्तों, सखी-सहेलियों के साथ हठखेलियाँ करती व उच्च शिक्षा की राह पर अग्रसित होती। काश मैं भी पुनः विद्यालय जाती।

एक दिन अचानक मेरे घर पर कुछ दीदियाँ आई थी जो कि भूमिका विहार के द्वारा काउंसिलिंग करने आई थी। उन्होंने मुझसे पूछा कि तुम विद्यालय जाती हो? तो मैं कुछ देर तक चुप्पी साधी रही, फिर मैंने बड़े हीं संकोच के साथ कहा की नहीं, मैं विद्यालय नहीं जाती हूँ। मेरे परिवार में बेटी को अधिक नहीं पढ़ाया जाता हैं और मेरी माँ बहुत हीं गरीब हैं, और मेरे पिताजी भी अब नहीं रहे। मेरी स्थिति इतनी अच्छी नहीं है कि मैं अपनी आगे की अधूरी पढ़ाई पूर्ण कर सकूँ। तब भूमिका विहार की दीदियों ने मेरी स्थिति और घर की स्थिति के बारे जाना तथा मेरी माँ को भी समझाया की अपनी बेटी को आप विद्यालय भेजिये। तभी मेरी माँ ने दीदियों से कहा की मेरे पास तो विद्यालय में नामांकन करवाने हेतु कोई भी दस्तावेज़ भी नहीं हैं और मैं तो इतनी पढ़ी-लिखी भी नहीं हूँ जो मैं अपनी बेटी का नामांकन करा सकूँ। भूमिका विहार की दीदियों ने अपना अथक प्रयास कर संस्था द्वारा पटना से लेटर पैड मंगवाया और उसमें Application लिखकर विद्यालय में प्रधानाध्यापक के पास जमा कर मेरा भी नामांकन उच्च विद्यालय रामपुर में करवाया गया। अब मैं प्रतिदिन विद्यालय जाया करती हूँ और अपनी पढ़ाई पूर्ण कर पाने में सक्षम हो पा रही हूँ। मैरी भूमिका विहार संस्था को तहेदिल से धन्यवाद करना चाहती हूँ, कि इनकी सहायता के द्वारा हीं मेरा नामांकन

विद्यालय में हो पाया और मेरा स्वपन जो कि उच्च शिक्षा प्राप्त करने का तह अब वो साकार हो रहा हैं।



आज के युवाओं की जरूरत

हमारा देश भारत युवाओं का देश हैं और युवा हीं भावी पीढ़ी के निर्माता होते हैं। किसी भी देश के रीढ़ की हड्डी युवा पीढ़ी को हीं माना जाता हैं। आज के समय में युवा शब्द सुनते हीं सभी के मन-मस्तिष्क में एक ऐसा चित्रा उभर कर सामने आ जाता हैं जिसमें दृढ़ इच्छाशक्ति हो, दृढ़ विश्वास हो, लगन-जुनून हो जो अपने कर्तव्यों से असंभव कार्य को भी संभव बना देता हो, जिसके आगे तूफान भी कमजोर हो जाये। जिनकी लोकप्रियता विश्व भर में गूँजता रहे। अपने कर्म पथ पर चलकर नित्या नये इतिहास गढ़ता रहे, ठीक उसी प्रकार जिस तरह अपने वौद्धिक क्षमताओं और अनमोल विचारों से स्वामी विवेकानंद जी ने विश्वभर में अपने भारत का परचम लहराया।

किसी भी देश की तरक्की में युवाओं की अहम योगदान होती हैं।वह जिस ओर चाहे देश का भविष्य उस ओर मोड सकता है। आज देश को उच्च शिखर तक पहुचाने में प्रयत्नशील भी हैं। युवाओं के बल पर अपने देश का नाम विश्वभर में फैली हुई हैं, परंतु आज के कुछ युवाओं की सोच बदलती जा रही हैं और वह अपनी क्षमताओं से अनभिज्ञ होते जा रहे हैं। अपने कार्य पथ से दिग्भ्रमित हो रहे हैं। वर्तमान में अत्यधिक युवा पीढ़ी को नशा, हिंसा व अन्य अपराध, इन तमाम तरह की औंछित मानसिकता वाले कार्यों से बचने की आवश्यकता हैं। उन्हे खुद की क्षमताओं से रूबरू होने की आवश्यकता हैं। जिसे पाकर वह नित नये-नये कार्यों को कर सके।

आज के युवाओं में पहले की तुलना में कुशल नेतृत्व करने की भरपूर क्षमता हैं । परंतु उन्हें सकारात्मक रुप से सटीक मार्गदर्शन एवं कुशल प्रशिक्षण की अत्यंत आवश्यकता हैं। **कहते है ना-**

> "बिना कौशल युवा होते असफल पाकर मार्गदर्शन युवा होते सफल"

अंततः आज की युवाओं की जो महत्वपूर्ण जरूरत हैं वो है -

- सुलभ संसाधन
- स्वास्थ्य सुविधाएं
- उच्च स्तरीय प्रशिक्षण व
- जीवन के विरल पथ को सुगम बनाने हेतु रोजगार व स्वरोजगार

जिसके परिणाम स्वरूप युवा आंतरिक रूप से सबल होकर नित नये-नये कार्य कर समाज व देश में अपनी पहचान स्थापित कर दुनियाभर में अपने देश का नाम रौशन कर सकेंगे।

